॥ श्रीहरिः ॥

1344

सचित्र-आरती-संग्रह

गीताप्रेस गोरखपुर

GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

गीताप्रेस, गोरखपुर

आरती कैसे करनी चाहिये

आरती पूजनके अन्तमें इष्टदेवताकी प्रसन्नताके हेतु की जाती है। इसमें इष्टदेवको दीपक दिखानेके साथ ही उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है।

आरतीमें पहले मूलमन्त्र (जिस देवताका जिस मन्त्रसे पूजन किया गया हो, उस मन्त्र)-के द्वारा तीन बार पुष्पांजलि देनी चाहिये और ढोल, नगारे, शंख, घड़ियाल आदि महावाद्यों तथा जय-जयकारके शब्दके साथ शुभ पात्रमें घृतसे या कपूरसे विषम संख्याकी बत्तियाँ जलाकर आरती करनी चाहिये।

साधारणतः पाँच बत्तियोंसे आरती की जाती है, इसे 'पंचप्रदीप' भी कहते हैं। एक, सात या उससे भी अधिक बत्तियोंसे आरती की जाती है। कपूरसे भी आरती होती है। पद्मपुराणमें आया है—

'कुंकुम, अगर, कपूर, घृत और चन्दनकी सात या पाँच बत्तियाँ बनाकर अथवा रूई और घीकी बत्तियाँ बनाकर शंख, घण्टा आदि बाजे बजाते हुए आरती करनी चाहिये।'

आरतीके पाँच अंग होते हैं—

प्रथम दीपमालाके द्वारा, दूसरे जलयुक्त शंखसे, तीसरे धुले हुए वस्त्रसे, चौथे आम और पीपल आदिके पत्तोंसे और पाँचवें साष्टांग दण्डवत्‌से आरती करें।

आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान्‌की प्रतिमाके

चरणोंमें चार बार, नाभिदेशमें दो बार, मुखमण्डलपर एक बार और समस्त अंगोंपर सात बार घुमाये।

आरतीके दो भाव हैं जो क्रमशः 'नीराजन' और 'आरती' शब्दसे व्यक्त हुए हैं। नीराजन (**निःशेषेण राजनं प्रकाशनम्**)-का अर्थ है—विशेषरूपसे, निःशेषरूपसे प्रकाशित करना। अनेक दीप-बत्तियाँ जलाकर विग्रहके चारों ओर घुमानेका अभिप्राय यही है कि पूरा-का-पूरा विग्रह एड़ीसे चोटीतक प्रकाशित हो उठे—चमक उठे, अंग-प्रत्यंग स्पष्टरूपसे उद्भासित हो जाय, जिसमें दर्शक या उपासक भलीभाँति देवताकी रूप-छटाको निहार सके, हृदयंगम कर सके।

दूसरा 'आरती' शब्द (जो संस्कृतके आर्तिका प्राकृत रूप है और जिसका अर्थ है—अरिष्ट) विशेषतः माधुर्य-उपासनासे सम्बन्धित है।

भगवान्‌के पूजनके अन्तमें आरती की जाती है। पूजनमें जो त्रुटि रह जाती है, आरतीसे उसकी पूर्ति हो जाती है। शास्त्रोंमें आरतीका विशेष महत्त्व बताया गया है। पूजनमें यदि मन्त्र और क्रियामें किसी प्रकारकी कमी रह जाती है तो भी आरती कर लेनेपर उसकी पूर्ति हो जाती है।

आरती करनेका ही नहीं, आरती देखनेका भी बहुत बड़ा पुण्य है। जो नित्य भगवान्‌की आरती देखता है और दोनों हाथोंसे आरती लेता है, वह अपनी करोड़ पीढ़ियोंका उद्धार करता है तथा अन्तमें भगवान्‌के परमपदको प्राप्त हो जाता है। अतः अत्यन्त ही श्रद्धा-भक्तिसे अपने इष्टदेवकी नित्य आरती करनी चाहिये।

श्रीसरस्वती-वन्दन

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

माँ सरस्वतीकी आरती

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता।
सद्‌गुण, वैभवशालिनि, त्रिभुवन विख्याता॥ जय० ॥
चन्द्रवदनि, पद्मासिनि द्युति मंगलकारी।
सोहे हंस-सवारी, अतुल तेजधारी॥ जय० ॥
बायें कर में वीणा, दूजे कर माला।
शीश मुकुट-मणि सोहे, गले मोतियन माला॥ जय० ॥
देव शरण में आये, उनका उद्धार किया।
पैठि मंथरा दासी, असुर-संहार किया॥ जय० ॥
वेद-ज्ञान-प्रदायिनि, बुद्धि-प्रकाश करो।
मोहाज्ञान तिमिर का सत्वर नाश करो॥ जय० ॥
धूप-दीप-फल-मेवा—पूजा स्वीकार करो।
ज्ञान-चक्षु दे माता, सब गुण-ज्ञान भरो॥ जय० ॥
माँ सरस्वती की आरती, जो कोई जन गावे।
हितकारी, सुखकारी ज्ञान-भक्ति पावे॥ जय० ॥

सर्वरूप हरि-वन्दन

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः॥

भगवान् जगदीश्वर

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु! जय जगदीश हरे॥
भक्तजनोंके संकट छिनमें दूर करे॥ ॐ ॥
जो ध्यावै फल पावै, दुःख विनसै मनका॥ प्रभु० ॥
सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका॥ ॐ ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी॥ प्रभु० ॥
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥ ॐ ॥
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी॥ प्रभु० ॥
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ ॥
तुम करुणाके सागर तुम पालन-कर्ता॥ प्रभु० ॥
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती॥ प्रभु० ॥
किस बिधि मिलूँ दयामय! मैं तुमको कुमती॥ ॐ ॥
दीनबन्धु दुखहर्ता तुम ठाकुर मेरे॥ प्रभु० ॥
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ ॥
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा॥ प्रभु० ॥
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतनकी सेवा॥ ॐ ॥

श्रीविष्णु-वन्दना

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहारवक्ष:स्थलकौस्तुभश्रियं
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥

भगवान् श्रीसत्यनारायणजी

जय लक्ष्मीरमणा, श्रीलक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन-पातक-हरणा॥ जय०॥ टेक॥
रत्नजटित सिंहासन अद्‌भुत छबि राजै।
नारद करत निराजन घंटा ध्वनि बाजै॥ जय०॥
प्रकट भये कलि कारण, द्विजको दरस दियो।
बूढ़े ब्राह्मण बनकर कंचन-महल कियो॥ जय०॥
दुर्बल भील कठारो, जिनपर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी बिपति हरी॥ जय०॥
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर अस्तुति कीन्हीं॥ जय०॥
भाव-भक्तिके कारण छिन-छिन रूप धर्‌यो।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सर्‌यो॥ जय०॥
ग्वाल-बाल सँग राजा वनमें भक्ति करी।
मनवाञ्छित फल दीन्हों दीनदयालु हरी॥ जय०॥
चढ़त प्रसाद सवायो कदलीफल, मेवा।
धूप-दीप-तुलसीसे राजी सत्यदेवा॥ जय०॥
(सत्य) नारायणजीकी आरति जो कोई नर गावै।
तन-मन-सुख-सम्पति मन-वाञ्छित फल पावै॥ जय०॥

श्रीलक्ष्मी-वन्दन

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

श्रीलक्ष्मीजी

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत हर-विष्णू-धाता॥ ॐ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ॐ॥
दुर्गारूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता।
जो कोइ तुमको ध्यावत, ऋधि-सिधि-धन पाता॥ ॐ॥
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधिकी त्राता॥ ॐ॥
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता॥ ॐ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान-पानका वैभव सब तुमसे आता॥ ॐ॥
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता॥ ॐ॥
महालक्ष्मी (जी)-की आरति, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ ॐ॥

शिव-शक्ति-वन्दन

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

भगवान् ब्रह्मा, विष्णु, महेश

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा
॥ॐ हर हर महादेव॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजै।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै॥ २॥ ॐ हर हर०
दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै॥ ३॥ ॐ हर हर०
अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी॥ ४॥ ॐ हर हर०
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे॥ ५॥ ॐ हर हर०
कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र शूलधारी।
सुखकारी दुखहारी जग-पालनकारी॥ ६॥ ॐ हर हर०
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षरमें शोभित ये तीनों एका॥ ७॥ ॐ हर हर०
त्रिगुणस्वामिकी आरति जो कोइ नर गावै।
भनत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित पावै॥ ८॥ ॐ हर हर०
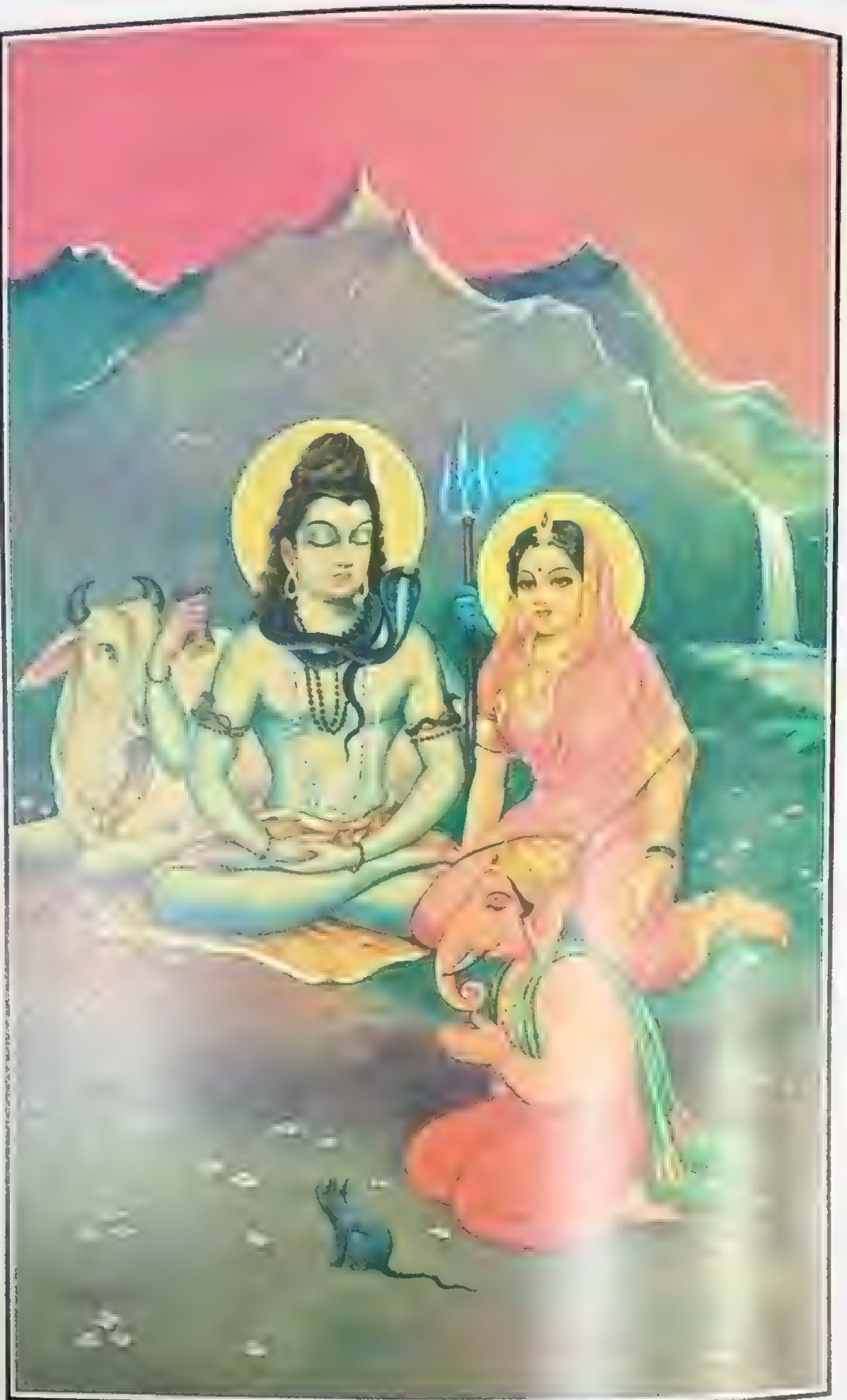
भगवान् महादेव

हर हर हर महादेव!
सत्य, सनातन, सुन्दर, शिव! सबके स्वामी।
अविकारी, अविनाशी, अज, अन्तर्यामी॥ १ ॥ हर हर०॥
आदि, अनन्त, अनामय, अकल, कलाधारी।
अमल, अरूप, अगोचर, अविचल, अघहारी॥ २ ॥ हर हर०॥
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तुम त्रिमूर्तिधारी।
कर्ता, भर्ता, धर्ता तुम ही संहारी॥ ३ ॥ हर हर०॥
रक्षक, भक्षक, प्रेरक, प्रिय, औढरदानी।
साक्षी, परम अकर्ता, कर्ता, अभिमानी॥ ४ ॥ हर हर०॥
मणिमय-भवन निवासी, अति भोगी, रागी।
सदा श्मशान विहारी, योगी वैरागी॥ ५ ॥ हर हर०॥
छाल-कपाल, गरल-गल, मुण्डमाल, व्याली।
चिताभस्मतन, त्रिनयन, अयनमहाकाली॥ ६ ॥ हर हर०॥
प्रेत-पिशाच-सुसेवित, पीतजटाधारी।
विवसन विकट रूपधर रुद्र प्रलयकारी॥ ७ ॥ हर हर०॥
शुभ्र-सौम्य, सुरसरिधर, शशिधर, सुखकारी।
अतिकमनीय, शान्तिकर, शिवमुनि-मन-हारी॥ ८ ॥ हर हर०॥
निर्गुण, सगुण, निरंजन, जगमय, नित्य-प्रभो।
कालरूप केवल हर! कालातीत विभो॥ ९ ॥ हर हर०॥
सत्, चित्, आनँद, रसमय, करुणामय धाता।
प्रेम-सुधा-निधि, प्रियतम, अखिल विश्व त्राता॥ १०॥ हर हर०॥
हम अतिदीन, दयामय! चरण-शरण दीजै।
सब बिधि निर्मल मति कर अपना कर लीजै॥ ११॥ हर हर०॥

श्रीराम-वन्दन

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं
सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महाशायकचारुचापं
नमामि रामं रघुवंशनाथम्॥

भगवान् श्रीजानकीनाथकी आरती

जय जानकिनाथा, जय श्रीरघुनाथा।
दोउ कर जोरें बिनवौं प्रभु! सुनिये बाता॥ टेक ॥

तुम रघुनाथ हमारे प्रान, पिता-माता।
तुम ही सज्जन-संगी भक्ति-मुक्ति-दाता॥ जय० ॥

लख चौरासी काटो मेटो यम-त्रासा।
निसिदिन प्रभु मोहि राखिये अपने ही पासा॥ जय० ॥

राम भरत लछिमन सँग शत्रुहन भैया।
जगमग ज्योति विराजै, सोभा अति लहिया॥ जय० ॥

हनुमत नाद बजावत; नेवर झमकाता।
स्वर्णथाल कर आरती कौसल्या माता॥ जय० ॥

सुभग मुकुट सिर, धनु सर कर सोभा भारी।
मनीराम दर्शन करि पल-पल बलिहारी॥ जय० ॥

भगवान् श्रीसीताराम

जयति श्रीजानकिबल्लभ लाल, करूँ तव आरति होय निहाल ॥

सीस पर क्रीट मुकुट झलकैं,
कपोलन पै झूलैं अलकैं,
कर्णमें कर्णफूल चमकैं,
नैन कजरारे, मोहनियाँ डारे, सुमन रतनारे,
सो चन्दन कुंकुम केसर भाल ॥ १ ॥

मधुर अति मूरत स्यामल-गौर, सुछबि जोड़ी राजत इक ठौर,
नहीं है उपमा कोई और,
निरखि रति लजै, मैन मद तजै, अंग सुभ साजै,
सो भूषन बर मुक्ता [illegible] ॥ २ ॥

परस्पर दो चकोर, दो चंद, प्रिया [illegible]
प्रेम-हिय छायो परमानंद,
मंद मृदु हँसन, रुचिर दुति [illegible]
दोउ सोहैं गल [illegible] ॥ ३ ॥

बजत बीना सितार सुमृदंग, [illegible]
होत पुलकायमान अँग-अँग,
रंग जब चढ़त, प्रेम हिय बढ़त, [illegible]
मधुर स्वर गावत दै दै ताल ॥ ४ ॥

स्वामिनी स्वामि कृपा-आगार, प्रनत जन रामेस्वर [illegible]
जोरि कर बिनवत बारंबार,
कछू नहिं बनत, नेम-तप-वरत, रहौं पद निरत,
करूँ नव आरति होइ निहाल [illegible]

श्रीजनक-दुलारीजी

आरति श्रीजनक-दुलारीकी।
सीताजी रघुबर-प्यारीकी॥ टेक॥

जगत-जननि जगकी विस्तारिणि,
नित्य सत्य साकेत-विहारिणि,
परम दयामयि दीनोद्धारिणि,
मैया भक्तन-हितकारीकी॥ सीताजी०॥

सती शिरोमणि पति-हित-कारिणि,
पति-सेवा हित वन-वन चारिणि,
पति-हित पति-वियोग-स्वीकारिणि,
त्याग-धर्म-मूरति-धारीकी॥ सीताजी०॥

विमल-कीर्ति सब लोकन छाई,
नाम लेत पावन मति आई,
सुमिरत कटत कष्ट दुखदाई,
शरणागत-जन-भय-हारीकी॥ सीताजी०॥

श्रीजनक-ललीजी

आरति कीजै जनक-ललीकी। राममधुपमन कमल-कलीकी॥
रामचंद्र मुखचंद्र चकोरी। अंतर साँवर बाहर गोरी।
सकल सुमंगल सुफल फलीकी॥
पिय दृगमृग जुग बंधन डोरी। पीय प्रेम रस-राशि किशोरी॥
पिय मन गति विश्राम थलीकी॥
रूप-रास-गुननिधि जग स्वामिनि। प्रेम प्रबीन राम अभिरामिनि।
सरबस धन 'हरिचंद' अलीकी॥

भगवान् श्रीकृष्ण

आरति श्रीकृष्ण कन्हैयाकी,
मथुरा-कारागृह-अवतारी,
गोकुल जसुदा-गोद-विहारी,
नंदलाल नटवर गिरिधारी,
वासुदेव हलधर-भैयाकी ॥ आरति० ॥

मोर-मुकुट पीताम्बर छाजै,
कटि काछनि, कर मुरलि विराजै,
पूर्ण सरद ससि मुख लखि लाजै,
काम कोटि छबि जितवैयाकी ॥ आरति० ॥

गोपीजन-रस-रास-विलासी,
कौरव-कालिय-कंस-बिनासी,
हिमकर-भानु-कृसानु-प्रकासी,
सर्वभूत-हिय बसवैयाकी ॥ आरति० ॥

कहुँ रन चढ़ै भागि कहुँ जावै,
कहुँ नृप कर, कहुँ गाय चरावै,
कहुँ जागेस, बेद जस गावै,
जग नचाय ब्रज-नचवैयाकी ॥ आरति० ॥

अगुन-सगुन लीला-बपु-धारी,
अनुपम गीता-ज्ञान-प्रचारी,
'दामोदर' सब बिधि बलिहारी,
बिप्र-धेनु-सुर-रखवैयाकी ॥ आरति० ॥

भगवान् श्रीकुंजबिहारी

आरती कुंजबिहारीकी। श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥ (टेक)

गलेमें बैजंतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला।

श्रवनमें कुण्डल झलकाला, नंदके आनँद नँदलाला॥ श्रीगिरधर०॥

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,

लतनमें ठाढ़े बनमाली,

भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक, चंद्र-सी झलक,

ललित छबि स्यामा प्यारीकी। श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥

कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसनको तरसै,

गगन सों सुमन रासि बरसै,

बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग,

अतुल रति गोपकुमारीकी। श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥

जहाँ ते प्रगट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा,

स्मरन ते होत मोह-भंगा,

बसी सिव सीस, जटाके बीच, हरै अघ कीच,

चरन छबि श्रीबनवारीकी। श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥

चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृन्दावन बेनू,

चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,

हँसत मृदु मंद, चाँदनी चंद, कटत भव-फंद,

टेर सुनु दीन दुखारीकी। श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥

आरती कुंजबिहारीकी। श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥

श्रीराधिका-वन्दन

व्रजराजकुमारवल्लभा कुलसीमन्तमणि प्रसीद मे।
परिवारगणस्य ते यथा पदवी मे न दवीयसी भवेत्॥

श्रीराधाजी

आरती श्रीवृषभानुसुताकी।
मंजु मूर्ति मोहन-ममताकी॥ टेक॥
त्रिविध तापयुत संसृति नाशिनि,
विमल विवेकविराग विकासिनि,
पावन प्रभु-पद-प्रीति प्रकाशिनि,
सुन्दरतम छबि सुन्दरताकी॥ १॥
मुनि-मन-मोहन मोहन-मोहनि,
मधुर मनोहर मूरति सोहनि,
अविरलप्रेम-अमिय रस-दोहनि,
प्रिय अति सदा सखी ललिताकी॥ २॥
संतत सेव्य संत-मुनि जनकी,
आकर अमित दिव्यगुन गनकी,
आकर्षिणी कृष्ण-तन मनकी,
अति अमूल्य सम्पति समताकी॥ ३॥
कृष्णात्मिका, कृष्ण-सहचारिणि,
चिन्मयवृन्दा-विपिन-विहारिणि,
जगज्जननि जग-दुःखनिवारिणि,
आदि अनादि शक्ति विभुताकी॥ ४॥

श्रीअम्बाजी

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री॥ १ ॥ जय अम्बे०
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वलसे दोउ नैना, चंद्रवदन नीको॥ २ ॥ जय अम्बे०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै॥ ३ ॥ जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी॥ ४ ॥ जय अम्बे०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती॥ ५ ॥ जय अम्बे०
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती॥ ६ ॥ जय अम्बे०
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥ ७ ॥ जय अम्बे०
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी॥ ८ ॥ जय अम्बे०
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू॥ ९ ॥ जय अम्बे०
तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तनकी दुःख हरता सुख सम्पति करता॥ १० ॥ जय अम्बे०
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर-नारी॥ ११ ॥ जय अम्बे०
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।
(श्री) मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती॥ १२ ॥ जय अम्बे०
(श्री) अम्बेजीकी आरति जो कोइ नर गावै।
कहत शिवानँद स्वामी, सुख सम्पति पावै॥ १३ ॥ जय अम्बे०

श्रीसूर्य-वन्दना

नमो नमस्तेऽस्तु सदा विभावसो
सर्वात्मने सप्तहयाय भानवे।
अनन्तशक्तिर्मणिभूषणेन
वदस्व भक्तिं मम मुक्तिमव्ययाम्॥

भगवान् सूर्य

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति-नन्दन।
त्रिभुवन-तिमिर-निकन्दन भक्त-हृदय-चन्दन॥ टेक ॥
सप्त-अश्वरथ राजित एक चक्रधारी।
दुखहारी, सुखकारी, मानस-मल-हारी॥ जय०॥
सुर-मुनि-भूसुर-वंदित, विमल विभवशाली।
अघ-दल-दलन दिवाकर दिव्य किरण माली॥ जय०॥
सकल-सुकर्म-प्रसविता सविता शुभकारी।
विश्व-विलोचन मोचन भव-बंधन भारी॥ जय०॥
कमल-समूह-विकासक, नाशक त्रय तापा।
सेवत सहज हरत अति मनसिज संतापा॥ जय०॥
नेत्र-व्याधि-हर सुरवर भू-पीड़ा-हारी।
वृष्टि-विमोचन संतत परहित व्रतधारी॥ जय०॥
सूर्यदेव करुणाकर अब करुणा कीजै।
हर अज्ञान-मोह सब तत्त्वज्ञान दीजै॥ जय०॥
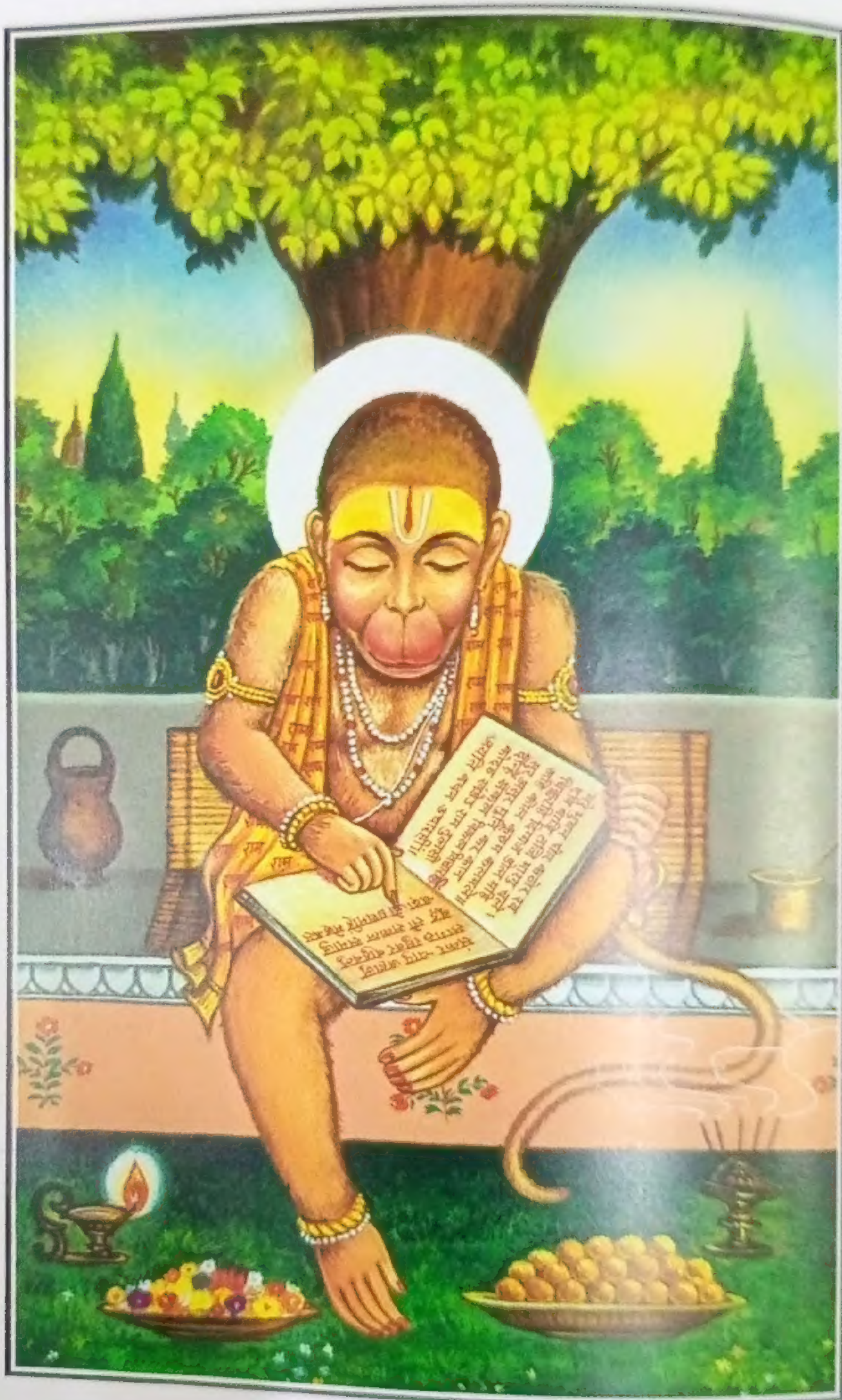
हनुमत्-वन्दन

मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

श्रीहनुमान्‌ललाजी

आरती कीजै हनुमानललाकी। दुष्टदलन रघुनाथ कलाकी ॥ टेक ॥
जाके बलसे गिरिवर काँपै। रोग दोष जाके निकट न झाँपै ॥
अंजनिपुत्र महा बलदायी। संतनके प्रभु सदा सहाई ॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सीय सुधि लाये ॥
लंका-सो कोट समुद्र-सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई ॥
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजीके काज सँवारे ॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्रान उबारे ॥
पैठि पताल तोरि जम-कारे। अहिरावनकी भुजा उखारे ॥
बायें भुजा असुरदल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे ॥
सुर नर मुनि आरती उतारे। जय जय जय हनुमान उचारे ॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई ॥
जो हनुमानजीकी आरति गावै। बसि बैकुंठ परम पद पावै ॥

श्रीगङ्गा-वन्दन

पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि॥

श्रीगंगाजी

जय गंगा मैया-माँ जय सुरसरि मैया।
भव-वारिधि उद्धारिणि अतिहि सुदृढ़ नैया॥
हरि-पद-पद्म-प्रसूता विमल वारिधारा।
ब्रह्मद्रव भागीरथि शुचि पुण्यागारा॥
शंकर-जटा विहारिणि हारिणि त्रय-तापा।
सगर-पुत्र-गण-तारिणि, हरणि सकल पापा॥
'गंगा-गंगा' जो जन उच्चारत मुखसों।
दूर देशमें स्थित भी तुरत तरत सुखसों॥
मृतकी अस्थि तनिक तुव जल-धारा पावै।
सो जन पावन होकर परम धाम जावै॥
तव तटबासी तरुवर, जल-थल-चरप्राणी।
पक्षी-पशु-पतंग गति पावैं निर्वाणी॥
मातु! दयामयि कीजै दीननपर दाया।
प्रभु-पद-पद्म मिलाकर हरि लीजै माया॥